Written by कुमार सौवीर
Saturday, 10 March 2018 10:40

: [illegible] ? : [illegible] : [illegible] : [illegible] :

[illegible]

[illegible] : कहावतें तो बेहिसाब हैं, जो किसी भी मसले को बेहद खूबसूरती के साथ और अपने मन्तव्य को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत कर सकती हैं। मसलन, बात करो ईरान की तो बोलेंगे तूरान की, गये गजोधर झांड़ा फिरने, ड्यूढै पहुंची बरात तो समधन लगै हगास, तब क्या पछतावे जब चिड़िया चुग गयी खेत। वगैरह-वगैरह। सच बात तो यही है कि किसी भी पूरे किस्से को एक छोटी सी लाइन में समझाने में पर्याप्त होती है सशक्त कहावतें। लेकिन ताजा मसले में जो कहावत मैं पेश करने जा रहा हूं, उससे बेहतर कोई भी कहावत नहीं हो सकती। कहावत है:- सत्ते ने लेटर भेजा फत्ते को, बांच रहे हैं लड़हू-जगधर।

मामला है यूपी की न्यायपालिका में पैसा उगाह कर फैसला देने को लेकर चल रही चर्चाओं का। इस पर सबसे भोंड़ा प्रदर्शन तब हुआ जब पूर्व समाजवादी पार्टी की सरकार में शामिल और अब तक के सबसे बड़े बेईमान खनन माफिया के तौर पर कुख्याति हासिल कर चुके पूर्व मंत्री गायत्री प्रजापति समेत तीन अभियुक्तों को लखनऊ के पॉक्सो कोर्ट के जज ने जमानत दे दी गयी। गजब बात यह है कि इससे पहले गायत्री ऐण्ड कम्पनी ने अपनी गिरफ्तारी को लेकर सर्वोच्च न्यायालय में एक याचिका लगायी थी, जिसमें कहा गया था कि उन्हें गिरफ्तार नहीं किया जाए। लेकिन सर्वोच्च न्यायालय ने इस याचिका को खारिज किया था। गायत्री और उसके इन साथियों पर आरोप है कि उन्होंने एक नाबालिग बच्ची के साथ दुराचार किया।

आपको बता दें कि इस मामले में इलाहाबाद उच्च न्यायालय के चीफ जस्टिस दिलीप बी भोंसले ने गायत्री प्रजापति को गैर-कानूनी तरीके से जमानत देने वाले पॉक्सो कोर्ट के एडीजे ओपी मिश्र को मुअत्तल कर दिया था, जबकि लखनऊ जिला एवं सेशंस जज राजेंद्र सिंह को हटा कर उन्हें चंदौली भेज दिया गया था। माना गया कि हाईकोर्ट प्रशासन ने इस मामले में भारी गड़बड़ और मोटी रकम का लेनदेन की बात मानी थी।

[illegible]:-

Written by कुमार सौवीर
Saturday, 10 March 2018 10:40

[□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□□□](#)

हाईकोर्ट केइस फैसले से जसि ओपी मशि्र पर जो गाज गरिी, उन्□हें 16 दनि पहले ही यह कुर्सी मलिी थी□ लेकनि सबसे ज्□यादा नुकसान तो राजेंद्र सहि को हुआ था□ उन्□हें राजधानी केजलिा व सेशंस जज की कुर्सी से तो हटाया गया ही, हाईकोर्ट ने कोलोजयिम को भेजे गये उस प्रस्□ताव को भी खारजि कर दयिा जसिमें राजेंद्र सहि को हाईकोर्ट में जस्टसि केपद पर पदोन्□नत कयिा जाना था□ कहने की जरूरत नहीं कि कसिी भी शख्□स को अपने जीवन में इससे बड़ा कोई भी धक्□का नहीं हो सकता है, कि उसे हाईकोर्ट कुर्सी पर बठिाने की प्रक्रयिा को रद कर दयिा जा□□

बहरहाल, जस्टसि दलिीप बी भोंसले ने इसी मामले पर □क गोपनीय पत्र देश केतब केसर्वोच्□च न्□यायाधीश जस्टसि जे□स खेहर को भेजा था□ इसमें गायत्री ऐंड कंपनी को जमानत देने केपूरे प्रकरण का जक्रि कयिा गया था, साथ ही इसमें इन दोनों जजों पर दायति्□व भी नर्धिारति कयिे गये थे□ खास बात यह है कि यह पत्र पूरी तरह गोपनीय था□ और ऐसे प्रवृत्त्ति केपत्र को सुरक्षा की परम्□पराओं केतहत चीफ जस्टसि द्वारा सील बंद कर वशिेष पत्रवाहक द्वारा सीधे सर्वोच्□च न्□यायाधीश केहाथों में ही थमाया जाता है□

□□□□□□□□□□-□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□:-

Written by कुमार सौवीर
Saturday, 10 March 2018 10:40

□□□□□□□ □□□□□ □□□□□

अब हालत यह है कि यह तो अब तक नहीं पता चला है कि दलिप बी भोंसले का यह गोपनीय पत्र जे□ स खेहर के हाथों तक पहुंचा भी या नहीं□ लेकिन अब यह पत्र मीडिया के हाथों में है, जो उसकी प्रतियां बना कर कभी पानी में जहाज बना रही है, या फिर उसकी बत्□ ती बना कर जहां-तहां बुन-सलि कर प्रयोग कर रही है□ इससे बड़ा मजाक और क्□ या होगा, जब इस तथाकथित पत्र की कॉपी प्रतिवादी टाइम्□ स ऑफ इंडिया के वकील ने इस मामले में भरी अदालत में मामले के वादी के हाथों में थमा दी□ इस पत्र में जो कुछ भी भोंसले द्वारा लिखा गया बताया जाता है, उस पर अब क्ड़ी प्रतिक्रिया□ं शुरू हो गयी है□ क्□ योंकि इस कथित पत्र का हवाला देते हु□ वभिनि□ न मीडिया संस्□ थानों ने जो खबरें प्□ लांट की है, उसमें काफी विवाद खड़ा हो गया है□ इतना ही नहीं, आरोप तो यहां तक लगाये जा रहे है कि यह □ कसाजशि के तौर पर पत्र लीक किया गया है, ताकि □ कजज को हाईकोर्ट में प्रोन्□ नत करने की प्रक्रिया को रद कराया जा सके□ कुछ भी हो, सवाल तो यह है कि इन दोनों शीर्ष जस्टसि के बीच होने वाले इस पत्रचार का खुलासा मीडिया में हो जाना खासा संवेदनशील मसला बताया जा रहा है□

अब जरा देखिये तो तनकि, कि इलाहाबाद हाईकोर्ट के चीफ जस्टसि के उस गोपनीय पत्र को किस-किस बड़े मीडिया समूहों ने अपनी सुर्खियां बना कर पेश किया था:- टाइम्□ स ऑफ इंडिया, नवभारत टाइम्□ स यानी □ नबीटी, जागरण डॉट कॉम, आई नेक्□ स्□ ट, हनि□ दुस्□ तान टाइम्□ स, अमर उजाला, मेन स्□ ट्रीम, इंडिया टुडे, आजतक समेत दर्जनों आदि□ सारा झंझट इसी विवाद को लेकर अब अदालत से लेकर सड़क तक फैलता जा रहा है□

है न हैरत की बात ?

हाईकोर्ट: चुम्‍मन ने लेटर भेजा जुम्‍मन को, बांच रहे हैं लड़हू-जगधर

Written by कुमार सौवीर
Saturday, 10 March 2018 10:40

इसी प्रकरण पर यह कहावत समीचीन है कि:- चुम्‍मन ने लेटर भेजा जुम्‍मन को, बांच रहे हैं लड़हू-जगधर

पुनश्‍च: खास बात यह है कि कहावतें हमेशा वक्‍त की लम्‍बी सान पर चढ़ा कर ही जन-सामान्‍य में अपनी मान्‍यता हासिल कर पाती है, जबकि मैं आपको जानकारी दे दूं कि यह कहावत मैंने बिलकुल ताजा तैयार की है।

जज बोला, ईमानदारी की तो फांसी पर लटकाये जाओगे
एक आलोक बोस हैं, और एक थे सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस

जो जीवन भर न्‍याय देती रही, आज इंसाफ की मोहताज

हैट्स ऑफ जिला-जज जया पाठक। मैं तुम्‍हारे साथ हूं और रहूंगा भी

बीमार जज ने दिया इस्‍तीफा। इलाज सरकार से नहीं, मैं खुद कराऊंगा
बधाई हो जज साहब, मगर आपको कैसे वापस मिली आपकी बिकी हुई आत्‍मा ?
ह्वाट डू यू वांट टू से योर ऑनर ! कि आपको अब किसी बाहरी हस्‍तक्षेप की जरूरत नहीं ? मी लार्ड, अहंकार छोडि़ये। ठोस और सकारात्‍मक विचार-विमर्श का रास्‍ता खोजिए
जज पर दबाव : मामला गंभीर, दबाव तो पड़ता ही है

बरेली सीजेएम के घर झंझट, जमानत अर्जी खारिज